एक नई दिशा

यह वहुत अच्छा अनुभव हुआ है कि हरिशचन्द्र बन्धु मे वहुत प्रगतिशील और मौलिक विचारधारा प्रदान करने वाले लेख पढने का अवसर मिला रहा है । जैसे राम धारावाहिक मे राम के चरित्र युग प्रर्वतक दृढ व्यक्तिव्व के रूप मै उभर कर सामने आया है । तत्कालीन समाज की रितियो का हम आज की राजनितियो घटनाओ से मनोवैज्ञानिक मापदन्ड से तुलनात्मक अध्ययन करे तो पायेगे कि मानव जाति हर समय मे अपने समाज की कुरितियों और अनयाय को सहती आई है । बहुत कम लोग कुशासन या शक्तिशाली द्वारा किये अतयाचार के विरोध मे आवज उठा सकने मे समर्थ होते है, कही पद खोने का भय, कही प्राण खोने का भय । इतिहास को जानने से हमे यही शक्ति मिलती है कि जो गलतिया हो चुकी है उन्हे हम फिर से न दुहराएं और समय रहते उन्हे समाज से दूर करने की कोशिश करें, अपने अन्दर साहास ला कर ।

लोग इस बारे मे चिन्तन करते है पर समस्याए कम होने के बजाय वढती हुई दिखाई देती है । कारण कुछ भी रहा हो पर सबसे बडा कारण व्यक्तिगत स्वार्थ है । स्वार्थ मनूष का व्यक्तिगत गुण है इसलिये यह बहुत अश्छी बात है कि हम स्वार्थी है । इस स्वार्थ को ही सर्वोपरि रखकर हम अपने देश व मानव जाति के भले के लिये प्रयोग कर सकते है । अमरीका मे एक बहुत अच्छा शब्द लोग बार बार इस्तेमाल करते है वह है WIN WIN इसका मतलव यह है कि तुम भी जीतो और पडौसी भी जीतें और सभी WINNER हो । यह तभी हो सकता है जब हम यह चाहे कि जो सुबिधा हमे मिल रही है हमारे पडौसी के पास भी हो । हम सभी को आगे बढना न कि मै तुमसे अच्छा इसलिये हूँ क्योकि मरे पास तुमसे ज्यादा पैसा है, या ज्यादा पढा हूँ, या ज्याद बडे पद पर हूँ । जीवन यापन के लिये हम जो भी करते हो पर हम सभी बराबर है, सभी मे उसी एक भगवान का वास है । तब मन्दिर मे जाकर यह नही कहना पडेगा कि भगवान मेरे बच्चे को इंजीनियर बना दो और एक अच्छी सी नौकरी भी दिला दो ताकि वह मेरे पढौसी के बच्चे से ज्यादा पैसा कमाये । बल्कि यह कहे हम सभी तो कैसा रहेगा कि भगवान हमारे पढौस के बच्चो को इतना समर्थ बना दे ताकि सभी बच्चे अपना जीवन यापन भली भांति कर सके और हमारे ईर्द गिर्द खुशहाली फैल जाय ।

अब आये अपनी समस्याओ को हल करने के बारे मे कुछ विचार करे । यह बहुत अच्छा समय है कि देश मे`स समय समविधान सुधार आयोग का गठन हो चुका है बस जरुरत है उसको उपयोग मे लाने की । हमारी सबसे बडी समस्याए है नौकरियो की कमी, भ्रष्टाचार, सफाई, पढाई, स्वास्थ व जनसंख्या । हमे यह तो मनाने मे कोई हानि नही है कि जब से हम स्वतंत्र हुये है सरकार के प्रयास सरहानीय है देश मे प्रगती हुई है, पर खरी नही उतरी है क्योकि प्रगति का फायदा हर स्तर पर नही हो पाया है। जनसख्या जो हमारे लिये समस्या है प्रगति का कारण व गौरव भी हो सकती है यदि हमेस सनसाधन का सही इस्तेमा करना सीख जाये तो चाईना इसका एक ज्वलन्त उदाहरण है । हमार सरकारी ढ़ाचा केन्द्रीयकरण पर आधारित है जबकि प्रगति विकेन्द्रीयकरण मे निहित है । हमे नये ढ़ग से सोचना होगा। ताकि नयी नयी सम्भावनाएं सामने आएं । हाँ नये तरीको मे गलतिया होगी पर जो अब हो रही है वह सब ठीक है क्या ? यहाँ एक बात सच मानिये कि कोई भी चीज मुफ्त नही होती है । देर सबेर हमको उसका मूल्य देना होगा ही इसी तरह हर गल्ती का भी मूल्य चुकाना पडता है । पर बार बार एक ही गलती का मूल्य क्यो दिया जाय । हमारा सरकारी तंत्र बनाया था ब्रिटेन के शासन ने, जो हमारे उपर राज्य करना चाहते थे उन्हे जनता की जरुरतो को समझने की जरुरत नही थी न उन्हे उसकी कुशलता की जरुरत थी । शिक्षा का पयोजन भी शासन के लिये क्लर्क उपलब्ध कराना था, लोग इसलिये यह नौकरियां करते थे कि मान बढेगा और अरामदयाक जीवन हो जायेगा यह सोचकर खुश रहते थे । अभी भी हमारी शिक्षा का यही मन्तव्य है, देश के लिये कर्णधार तैय्यार करना नही है, सरकारी नौकरी या आई ए एस बनना है। अब अगर हम जैसा अब तक करते आये वैसा ही करते रहेगे तो वही फल मिलता रहेगा जैसा अब तक मिल रहा है । यदि बदलना है तो सोचने के तरीके के तरीके मे अमूल चूल परिवर्तन लाना होगा । पुलिस बजाय दिल्ली लखनऊ से आने के स्थानिये छोटे छोटे शहरो की अपनी होनी चाहिये ताकि व अपनी आवश्यकतानुसार अपने ही नव युवक व नवयुतियो से बने । और शहर के मेयर जो जनता से जुना गया है उसके हाथ मे हो । मुख्य सिध्दांत यह होना चाहिये की जुने हुये प्रतिनिधीयो को चयनियत सेवको से ज्यादा अधिकार होने चाहिये । कोई भी प्रतिनिधी एक पद को दो बार से ज्यादा ग्रहण न करे। उससे भाई भतीजावाद कम होगा और ट्रान्सफर मे होने वाली धांलिया व खर्चा कम होगा । कितनी सुरक्षा आपको शहर, कसबे या गाँव मे चाहिये और उसका खर्च उठाने को आप तैय्यार है वह आपको मिलेगी । सफाई के लिये कूडे को बिजली मे गैस मे कैसे बदला जा सकता हैउस पर ठयान देना होगा । जिससे नये नये उपकरण बनेगे और ईजाद होगे, सम्भावनाये बढेगी, नई नौकरिया पैदा होगी । सफाई ठीक होने पर प?दूष्ण परव स्वास्थ पर फर्क पडेगा । लेकिन यह ध्यान देने की बात है जो इन नये तरीके से प्रभावित ो उनको इस उपक्रम मे शामिल किया जाय । पानी की कमी हर घर मे पम्प लगाने से दूर नही होगी या हर घर मे गंगा टंकिया लगाने से नही होगी । बिजली का भी भरण हर घर मे इन्वरटर या जेनरेटर लग जाने से ही नही होगी इससे तो प्रदूषण को ही बढाबा मिलेगा उससे सबसे ज्यादा निम्न वर्गो के स्वास्थ पर प्रतिकूल असर पढेगा । अहर समास्या सबकी है तो हल भी सबको मिलकर निकालना होगा ।

गतिरोधक इतने अधिक हमारी सडको पर लगे है उनसे हमारे वाहनो पर, व ईधन की इतनी अधिक बेकारी होती है कि इससे हमारी आर्थिक स्थिति पर प्रतिकूल प्रभाव पड रहा है , समय और धन का अपव्यय होता है वह अलग, पर

सबसे ज्यादा अप्रत्यक्ष प्रभाव है जो हमारी सोच को दर्शाता है कि हम हर काम मे अडंगा लगाना आता है यह हमारी समाजिक मनोवृति का प्रतीक है । हमे एक दूसरे के सहयोग से आगे बढ़ाने और सर्वजन हिताय रास्तो को अपनाना होगा ना कि मरहम पट्टी की तरह सडक पर अबरोध बनाने से समस्या सुलझ जायेगी ।
सरकारी तंत्र से गुप्तता को समाप्त किया जाय, जो अभी हो भी गई है इस लेख को लिखने के बाद । हर समस्या को छोटे छोटे हिस्सो मे बाटा जाय ताकि हल भी छोटे छोटे रुप मे हो सके । सरकारी महकमो मे फीस समयानुसार लि जाय जैसे यदि काम जल्दी चाहिये तो फीस अधिक । जैसे यदि तुरंत काम तो फीस अधिक जैसे रेलवे मे तत्काल सेवा है खासतौर पर कोर्ट में और पासपोर्ट आफिसो मे होता है । सरकारी महकमो को अपना खर्च खुद निकलना चाहिये न कि वह जनता पर वोझ बन जाय । जिन महकमो का अब ओचित्य नही है उन्हे बन्द कर देना ही अच्छा है जैसे शराणार्थी राशन सप्लाई इत्यादी ।
सफाई के मूल मे जाय तो पता चलता है कि वह हमारे ही मेहतरो के तलै दबी पडी है और रेलवे इसके लिये पूर्ण रुप से जिम्मेदार है पुरे देश मे गन्दगी फैलाने के लिये । शहरो मे स्टेशनो मे व रेलवे लाईनो के आस पास बहुत ही ज्यादा गन्दगी रहती है । इसीलिये रेलवे लाईनो के आस पास के लोग भी शौचालय न होने के कारण उसके किनारे बैठ कर काम चला लेते है । अगर गाडी स्टेशन से गुज़र गई तो आप सच मानिये आप वहाँ खडे रहकर अपनी तबियत खराव नही करना चाहेगें । उस तरह की गन्दगी सिर्फ भारत व उसके पढोसी देशो को छोडकर कही नही पाई जाती है कारण जनना चाहते है वह यह है कि रेल के डिब्बो के नीचे एक फाईबर ग्लास का टैंक लगा दिया जाता है को गन्दगी को रेल लाईन के पास गिरने से रोकता है और बडे बडे स्टेशनो पर पम्पो से साफ कर दिया जाता है जहाँ पर सिटी सिवेज की सुविधा है जैसे पानी भरा जाता है, पानी खाली भी किया जा सकता है। जब एक खोन्चे बाले को अपना कूडा रखने के लिये एक कूडादान रखना पडता है तो भारतीय रेलवे को किसने यह इजाजत दे रक्खी है कि सारे सुन्दर भारत मे गन्दगी को बांटते फिरे । घरो का भी कूडा हर रोज फैकने की मनाई करनी होगी, सिर्फ सप्ताह मे एक निश्चित दिन ही कूडा बाहर फेक सकते है जब सात दिन का कूडा घर मे रक्खेगे तब कूडे की बदबू व महत्व हमारी समझ मे आयेगा कि इसको किस तरह रखना या निकालना चाहिये । इस कूडे से बिजली भी बनाई जा सकती है या शहर के बाहार दफनाकर खाद भी बनाई जा सकती है जरुरत है सिर्फ एकजुट साथ काम करने की और थोडी सी व्यवस्था बनाये रखने की ।
घरो पर टैक्स आज की कीमत पर देना होगा ताकि सुबिधाये भी आज की तरीख मे दी जा सकें । यह कूछ बडे शहरो शुरु हो चुका है । तंत्र का उपयोग जनता की सुविधा के लिये हो नाकि जनता को सताने या चूसने के लिये हो ना चाहिये । साथ ही हर नागरिक को अपने कर्तव्य का बोध भी हो । यदि सरकारी तंत्र गोपनियता को छोडकर अपने कार्य कल्पो का विवरण नागरिको को सुलभ कराये तभी हर नागरिक को अपने कर्म का वोध होगा । हर सरकारी महकमे के साथ नागरिको की एक सलाहकार समिति होनी चाहिये जिसकी सदस्यता का माप दन्ड धन से जुडा न होकर समाजिक जागरुकता के प्रति होना आवश्यक हो, व इन समितियो को राजनीतिज्ञ मोहरेवाज़ी से दूर रखना होगा। सिर्फ एक बार तीन साल के लिये चुना जाय । पुलिस, बिजली, पानी, पढाई, प्लानिग सडक निर्माण एक सरकारी महकम न होकर जनता के अधिकार मे होने चाहिये जो लाभ की चिन्ता किये बिना काम करे, सरकारी शिकंजे मे रहकर नही जहाँपर नियम इतने ज्यादा है कि नये विचारो का गला ही घुट जाये। सरकार का काम च्यवस्था को बनाये रखना होना चाहिये उनको चलाना नही । प्रतिस्पर्धा गतिशीलता के लिये जरुरी है । सरकारी नौकरी सुरक्षा के बजाय जडता मे बदल गई है । पहले सभी लोग इन बातो का बिरोध करेगे पर चारा क्या है हमे नई दिशा दलाव के लिये सोचनी ही पडेगी ।
नज़र को बदलिये नज़ारे बदल जायेगे, सोच को बदलिये सितारे बदल जायेगे ।
किश्ती को बदलने की जरुरत नही है, दिशा को बदलिये किनारे बदल जायेगे ।।
बदलाव मे ही प्रगति निहित है । हमारे देश मेका भविष्य एक व्यक्ति, जाति, परिवार पर निर्भर न होकर सब देशा वासियोपर निर्भर होना चाहिए और समाज सेवा धर्म होना चाहिये, पेशा नही । जो यह परिस्थिती वस नही कर सकते है उन्हे खुद अपना पद त्याग कर दूसरो को मोका देना चाहिये ।
यह सब लिखने का सारंश यह है कि मिलकर हम विश्वास के से हम स्मस्याओ को हलकर सकते है अगर स्मस्या हल नही हुई तो यह सोचना चाहिये कि इसके पीछे किसी का स्वार्थ तो निहित नही है। तभी समस्या बनी हुई है । जैसे परमिट सिस्टम बसो के लिये होता है, या आटो के लिये, रिक्शाओ के लिये होता है, जबकि सरकार को उन पर बैठने बालो की सुबिधा व सुरक्षाके लिये चिन्तित होना ज्यादा जरुरी है क्योकि आपको टैकसियो व टैम्पो मे बैठी जनता को देखकर ही पता लग जायेगा । अगर हम सोचते है कि हम समस्या का कारण नही है तो आइये हम उनके सुलझाने का कारण बन जाय बरना यह सब समस्याये सुरसा के मुहँ की तरह बढती जाएगी । किसी को तो करना ही होगा तो मै ही क्यो न पहल करु ? जो मै कर सकता हूँ करु। यह सोचना जरुरी है कि यदि समस्या हल नही हुई है तो हल निकलेगा और यदि हो गई, तो यह नही हकि नई और पैदा नही होगी, यह एक सतत प्रयास है जो पीढी दर पीढी चलती रहेगीं । आईये हम सब यह निर्णय ले लि हम समाज सेवा के लिये आधा घन्टा समय देगे और अपनी आय का दसवाँ हिस्सा समाज के उत्थान मे लगायेगे तो देखे कितना संतोष होगा ब मानसिक शान्ति मिलेगी ।
परहित जा के वस मन माही तिन नही दुलर्भ जग कुछ नाही । रश्मि उमेश रोहतगी नोवी मिचिगन अमरीका

Umesh Rashmi Rohatgi 24161 Nilan Drive Novi MI 48375 USA web:www.rurhatgi.com Email:rurohatgi@yahoo.com